B.A. Part III Pol. Sc Paper 6th

भारत का विभाजन
(Partition of India)

माउंटबेटन योजना की स्वीकृति ने अंग्रेजों को भारत छोड़ने के लिए मजबूर कर दिया। कांग्रेस शुरू से ही देश के विभाजन के विरुद्ध थी। इसके विपरीत मुस्लिम लीग देश-विभाजन और पाकिस्तान की मांग पर अड़ी हुई थी। लीग के हठधर्म और सांप्रदायिक दंगों के फलस्वरूप कांग्रेस को झुकना पड़ा और देश-विभाजन की स्वीकृति देनी पड़ी।

विगत वर्षों में भारत का विभाजन एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना है। देश-विभाजन के निम्नांकित कारण थे।

1. मुसलमानों की अलगाववादी नीति :— बीसवीं शताब्दी के शुरू से ही मुसलमान नेताओं अलगाववादी नीति को अपनाना शुरू कर दिया। इसके पूर्व सरकार की मुस्लिम-विरोधी नीति के परिणाम स्वरूप मुस्लिम जनों की प्रगति अवरुद्ध हो गयी थी। मुस्लिम लीग के नेता सैयद अहमद खाँ ने महसूस किया कि हिंदुओं से अलग होकर ही मुस्लिम प्रगति कर सकता है। ब्रिटिश सरकार ने भी मुसलमानों को पृथकतावादी नीति अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे मुसलमानों की पृथकतावादी नीति दृढ़तर होती गयी।

2. हिंदुओं की अछूतवादी नीति :— कट्टरपंथी हिंदुओं की अछूतवादी नीति ने मुसलमानों की पृथकतावादी नीति के लिए आग में घी का काम किया। कट्टरपंथी हिंदू मुसलमानों के सामाजिक बहिष्कार में विश्वास करते थे। उनके रीति-रिवाज और व्यवहार ने मुसलमानों को यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि हिंदू-बहुल भारत में उनका धर्म, भाषा और संस्कृति सुरक्षित नहीं है। आगे चलकर यह भावना दृढ़ हो गयी और इसने सांप्रदायिक विद्वेष का रूप धारण कर लिया।

Scanned with CamScanner

3. हिंदु महासभा का रुख :— कट्टरपंथी हिंदुओं ने धर्म के आधार पर एक अलग संगठन बनाया। जिसे हिंदू महासभा कहते हैं। वह हिन्दू राष्ट्र की स्थापना चाहती थी। कई अवसरों पर हिंदु महासभा के नेताओं ने अनुत्तरदायी तथा भड़कीले भाषण दिए। इसके प्रतिक्रिया स्वरूप मुस्लिम लीग ने अपना संगठन मजबूत करना शुरू कर दिया।

4. जिन्ना का हठधर्म :— शुरू से ही पाकिस्तान के निर्माण में जिन्ना ने कड़ा रुख अपनाया। बहुत प्रयत्नों के बावजूद उसने हठधर्म को नहीं छोड़ा। उसने राष्ट्रवादियों को सहयोग देने से इनकार कर दिया। दूसरी ओर काँग्रेस विदेशी सत्ता से मुक्ति पाने के लिए व्याकुल थी। अतः उसने तत्कालीन दूसरा रास्ता न निकलते देख अनमने रूप से भारत विभाजन को स्वीकार कर लिया।

"3 जून 1947 को लॉर्ड माउंटबेटन ने कहा था, एक अखंड भारत भारतीय समस्या का सर्वोत्तम समाधान होता। लेकिन, चूँकि पाकिस्तान के अलावा अन्य आधार पर दलों में समझौता होने की संभावना नहीं थी। इसलिए इन लोगों ने भारत-विभाजन को हिचक के साथ स्वीकृति दी थी।"

5. अँगरेजों की भारत को कमजोर करने की नीति :— अँगरेज वर्षों से भारत का शोषण कर रहे थे और भविष्य में भी वे इससे लाभ उठाना चाहते थे। अतः इन्हें दुर्बल भारत की आवश्यकता थी। इसका सबसे सरल उपाय था भारत का विभाजन जिससे विभाजित भाग आपस में लड़ते रहें। अतः उन्होंने ऐसी नीति अपनाई जिससे लाचार होकर काँग्रेस को पाकिस्तान के निर्माण की माँग मानना पड़ा।

6. "फूट डालो और शासन करो" की नीति :— शुरू से ही अँगरेजों ने भारत पर अपना शासन बनाएँ रखने के लिए भारतीयों पर फूट डालो शासन करो की नीति अपनाई। इस उद्देश्य से मुसलमानों में सम्प्रदायवाद का बीज बोया। इसका सबसे बड़ा उदाहरण 1909, 1919 और 1935 ई० के अधिनियमों द्वारा पृथक निर्वाचन की व्यवस्था कर सम्प्रदायवाद के जड़ को मजबूत कर दिया गया। इस प्रकार अँग्रेजों ने पारस्परिक फूट का बीज बोया, जो अंत में

Scanned with CamScanner

भारत-विभाजन का कारण बना।

7. अखंड भारत के लिए पाकिस्तान आवश्यक :- बहुत से नेताओं के विचार में पाकिस्तान भौगोलिक, राजनीतिक, आर्थिक, सैनिक दृष्टि से एक कमजोर राष्ट्र होगा। उन्होंने यहाँ तक आशा व्यक्त की कि विषम परिस्थितियों तथा आंतरिक कमजोरियों के कारण पाकिस्तान अधिक दिनों तक अपना अस्तित्व कायम नहीं रख पायेगा और समाप्त हो जायेगा और भारत पुनः एक हो जायेगा। "आचार्य कृपलानी ने कहा था एक दृढ़ और सुखी प्रजातांत्रिक भारत अपने से अलग होने वाले भाग को पुनः वापस ला सकता है, क्योंकि हमारी स्वतंत्रता भारत के एकता के बिना पूर्ण नहीं हो सकती है।"

मौलाना आजाद और सरदार पटेल ने भी पाकिस्तान की स्वीकृति इसी आधार पर दी कि यह राज्य अव्यवहारिक सिद्ध होगा और बहुत जल्द समाप्त हो जायेगा।

8. सत्ता हस्तांतरण की धमकी :- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की कि एक निश्चित तारीख के अंदर हर हाल में भारतीयों को सत्ता सौंप दी जायेगी। भारतीय नेताओं में यह भय हो गया कि अगर भारत का विभाजन नहीं हुआ तो सत्ता-हस्तांतरण के समय गृहयुद्ध (Civil war) की नौबत आ सकती है। इससे देश के अधिक टुकड़ों में बटने की संभावना बढ़ सकती है। यह भी संभव था कि माउंटबेटन फार्मूला को स्वीकार न करने की दिशा में ब्रिटिश सरकार अपने निर्णय को भारतीयों पर थोप सकती थी। यह और अधिक हानिकारक सिद्ध होता।

9. एक छोटा पर संगठित और दृढ़ भारत कमजोर और विशाल भारत से अधिक वांछनीय :— अधिकांश नेता इस बात से सहमत थे कि देश की विशालता उतनी महत्वपूर्ण नहीं है जितनी की उसकी सुदृढ़ता। पंडित पंत ने कहा था कि पाकिस्तान की स्वीकृति से शेष भारत संगठित और सशक्त बनेगा, उन्नति करेगा और विश्व में अपना स्थान प्राप्त करेगा। शेष भारत में "द्विराष्ट्र सिद्धान्त" सहन नहीं किया जायेगा तथा प्रत्येक नागरिक को अपनी पूर्ण भक्ति राष्ट्र को देनी पड़ेगी। यदि मुसलमानों

Scanned with CamScanner

को यहाँ रहने के लिए विवश किया गया तो पूर्ण और स्थायी के कारण प्रगति और योजना कुछ भी संभव नहीं है।

10. कॉंग्रेस की मुसलमानों के प्रति तुष्टीकरण की नीति :— बहुत से आलोचक देश-विभाजन के लिए कॉंग्रेस को उत्तरदायी ठहराते हैं। लखनऊ पैक्ट, 1916 द्वारा कॉंग्रेस मुस्लिम लीग से समझौता करके सबसे बड़ी गलती की। उसने पृथक निर्वाचन और मुसलमानों के लिए अलग प्रतिनिधित्व मानकर भारत में संप्रदायवाद को स्वीकार कर लिया। 1931 ई० के सांप्रदायिक निर्णय के प्रति उसके रुख ने मुस्लिम लीग को कड़ा रुख अख्तियार करने के लिए प्रोत्साहित किया। बाद में कॉंग्रेस लीग को संतुष्ट करने के लिए सदा झुकती रही। कॉंग्रेस के इस रुख से मुसलमानों को पाकिस्तान की माँग पर डटे रहने के लिए प्रोत्साहन मिला।

11. सत्ता का लालच :— कॉंग्रेसी नेता द्वितीय युद्ध से पहले सत्ता का फल चख चुके थे। अतः वे किसी प्रकार से सत्ता हथियाने के पक्ष में थे। माइकल ब्रेचर के शब्दों में "सत्ता का लालच कॉंग्रेसी नेताओं के लिए सबसे बड़ा आकर्षण था, क्योंकि वे इसका फल चख चुके थे। अतः यह स्वाभाविक था कि विजय के मुहूर्त में वे इससे दूर नहीं रहना चाहते थे।

12. माउंटबेटन का प्रभाव :— लॉर्ड माउंटबेटन चाहते थे कि भारतीयों को जल्द से जल्द स्वतंत्रता मिल जाय, देश-विभाजन अंग्रेजों के लिए हितकारी समझा। उनकी कुशलता और नम्रतापूर्ण व्यवहार देश-विभाजन के विरोधी नेताओं सरदार पटेल, गाँधीजी, पंडित नेहरू के हृदय को जीत लिया। लेकिन लॉर्ड माउंटबेटन एवं उनकी पत्नी के प्रयत्नों के फलस्वरूप उन्होंने अपना विचार बदल दिया। भारतीय भी स्वतंत्रता प्राप्ती के लिए वर्षों से संघर्ष कर रहे थे। अतः देश-विभाजन की कीमत पर वे विदेशी सत्ता से मुक्ती पाने के लिए तैयार हो गये।

Scanned with CamScanner